(पर्दा उठता है)

कथावाचक(Narrator): आज हम सुनेंगे ऐसे वीर पुरुष की कहानी,

जिन्होंने अपने देश को बचाने के लिए दे दी जिंदगी की कुरबानी

जिंदगी की वसंत में ही, अंग्रेजों ने उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया

अपने देश की रक्षा के लिए भगत सिंह ने अपना जीवन समर्पित किया

दृश्य I

Announcer (with placard): जलियाँवाला बाग, 13 अप्रैल 1919

[हर कोई आनंद ले रहा है]

व्यक्ति1: वाह, आज कितनी अच्छी धूप खिली है!

व्यक्ति 2 : खिली तो है, पर शहर मे हालत तो, अँधेरा और उदासी ही छाई हुई है

व्यक्ति 3: अरे क्यों, ऐसा क्या हुआ?

व्यक्ति 4: दोस्त कोई 'रौलट एक्ट' आया है, जिसमे भारतियों को बिना न्यायिक प्रक्रियाएं के जेल भेजा जा सकता है

व्यक्ति 2 : यह अंग्रेज तो हद ही पार कर रहे है!

व्यक्ति 1: [सबको गले लगाकर]: अरे आज तो उत्सव का दिन है, यह टेन्शन छोड़ो और आनंद लो!

[सब लोग फिरसे मस्ती करने लगते है, एक पंजाबी गाना चलता है]

[अचानक से गाना बंद होता है, जनरल डायर सैनिकों के साथ आता है]

जनरल डायर (घृणा के साथ): तो तुम **'Dirty Indians'** विद्रोह करोगे!!! सारे रास्ते बंद करो और इन्हें भून दो गोलियों से !!!!!

[सैनिक सारे दरवाज़े बंद कर देते है और गोलियां चलती है, लोगो अफरा तफरी में इधरउधर भागते है, थोड़ी देर में सब शान्त]

जनरल डायर: (हस्ते हुए) अब करके दिखाओ विद्रोह, चलो Boys हमारा काम हो गया

[जनरल डायर और सैनिक निकल जाते है]

कथावाचक [गम्भीर आवाज़ में]: इस सुनहरे दिन को अंग्रेज़ो ने बना दिया लाल,

इस हत्याकांड की भूमि पे आया एक 12 साल का बाल

[भगत सिंह प्रवेश करते हैं]

भगत सिंह: (***मिट्टी को हाथ मे उठा कर):*** यह इस दुनिया की सबसे बढ़िया मिटटी है, क्यूंकि इसको पोषण मेरे देशवासियों के खून ने दिया है, यह मुझे हमेशा याद दिलाएगी कि देश के लिए कोई कुरबानी बड़ी नहीं है

कथावाचक: और ऐसे आया भगत सिंह के मन में क्रांति का विचार,
सोच लिया अब तो अंग्रेजों को चखानी है हार

**** दृश्य I की समाप्ति ****

दृश्य II

Announcer (with placard)*: भगत सिंह का घर, 1926*

भगत सिंह की माँ: *भगत मेरी एक इच्छा पूरी करोगे?*

भगत सिंह*: हां जरूर मां, बताओ*

भगत सिंह की माँ: *मैं चाहती हूं कि तुम्हारी किसी अच्छी लड़की से शादी हो जाए, तो क्या तुम...*

भगत सिंह: (बीच में बात काट कर) : ये तो नहीं हो सकता माँ. जब तक मेरा देश आज़ाद नहीं हो जाता ***तब तक मेरी सिर्फ एक ही दुल्हन है, और वो है मौत***

भगत सिंह की माँ (हैरान): *ये तुम क्या कह रहे हो? इतनी कम उम्र में मौत की बात?*

भगत सिंह : जी हां मां, और इसी के लिए मैं घर से जा रहा हूं, अपने जैसे क्रांतिकारियों को ढूंढ़ने के लिए

भगत सिंह की माँ: पर भगत रुको तो सही......

[भगत सिंह बिना कुछ बोले वहां से निकल जाता है]

****दृश्य II की समाप्ति ****

Announcer (with placard): एचएसआरए बैठक, 1928

कथावाचक: क्रांतिकारीयो पर था देश को आज़ाद कराने का भार ,

इतने में आया एक बहुत दुःखद समाचार

क्रांतिकारी 1: क्या तुम लोगों ने खबर सुनी?

क्रांतिकारी 2: कौनसी खबर, अब क्या हुआ?

क्रांतिकारी 1: लाला राजपत राय की मृत्यु हो गई है

क्रांतिकारी 3: क्या!? तुम्हें विश्वास है कि ये सच है?

क्रांतिकारी 4: [अत्यंत दुख के साथ] जी हां, ये सच है। और ये भी कि उनकी मौत अंग्रेजों की लाठियों की वजह से हुई है

क्रांतिकारी 3: [गुस्से से आग बबूला होकर] हम उन अंग्रेजों को ऐसा मजा चखाएंगे, कहा है मेरी बंदूक!!!!!! ......

भगत सिंह : बैठ जाओ अपनी कुर्सी पे, गुस्से में कुछ नहीं होगा! हमें शांत दिमाग से सोचना होगा, अब मेरी बात सुनो सब.........

{सब घेरा बनाते हैं, कुछ देर धीमी आवाज में बात करते हैं, फिर सर हिलाते हैं और निकल जाते हैं}

**** *दृश्य III* की समाप्ति ****

दृश्य IV

Announcer (with placard): एचएसआरए बैठक स्थल, कुछ घंटों बाद

कथावाचक: लाला राजपत राय के हत्यारे की हत्या एचएसआरए ने की,

इसी लिए उन लोगों को पकड़ने के लिए पूरी अंग्रेज सरकार लगी हुई थी

क्रांतिकारी 2: (बहुत परेशान) ये तो गड़बड़ हो गई! हमने उस अंग्रेज को मार तो दिया पर अब अंग्रेज सरकार हमारे पीछे ही पड़ गई है!!

क्रांतिकारी 1: हां यार, अब तो बचना मुश्किल ही है

भगत सिंह: इतनी जल्दी दिल हार गये? अब देश से प्यार किया है तो डरना क्या!

क्रांतिकारी 3: लेकिन मेरी बूढ़ी माँ का क्या होगा?

क्रांतिकारी 4: और मेरे बच्चों का?

क्रांतिकारी 1: मैं तो कहता हूं कि हमें किसी दूर दराज के इलाके में छुप जाना चाहिए

(लगभग सभी लोग सिर हिलाकर हाँ हाँ कहते हैं)

भगत सिंह: मैं समझ सकता हूं, ठीक है अगर तुम चाहते हो तो अंग्रेजों से डरकर चले जाओ। लेकिन मैं अंग्रेजों से नहीं डरता, मैं आखिरी सांस तक लड़ता रहूंगा

बी.के. भट्ट: लेकिन अंग्रेज तो तुम्हें पकड़ ही लेंगे, तुम्हारा क्या होगा?

भगत सिंह: मुझे पता है, पर मैं एक आखिरी बार अंग्रेजों को मजा चखाना चाहता हूं

थोड़े दिनों में अंग्रेज अपना एक और शोषन वाला बिल पास करनेवाले हैं। असेंबली में एक बम फेंकूंगा, जो सिर्फ आवाज करेगा। पर वो आवाज़ इतनी तेज़ होगी कि बहरे अंग्रेज़ों को भी सुनाई देगी

बी.के. भट्ट: [उत्साह के साथ] मैं तुम्हारे साथ हूं भगत।

भगत सिंह: [उसके कांधे पे हाथ रख कर] तुम्हें पता है ना कि अंग्रेज हमें फांसी पर चढ़ा देंगे?

बी.के. भट्ट: मुझे पता है भगत, पर मैं ऐसी डरपोकों की जिंदगी जी कर थक चुका हूं।चलो इन सब को मजा चखाएं!! इंकलाब जिंदाबाद!

{वे एक-दूसरे को गले लगाते हैं}

*****दृश्य IV*** **की समाप्ति ****

दृश्य V

Announcer (with placard): Central legislative assembly नई दिल्ली, (April 8, 1929)

कथावाचक: नहीं मंगनी थी अंग्रेजों से दया की भीख,
देनी थी उनको एक आखिरी कड़वी सीख

अंग्रेजी विधायक: आज हम यहां पास करने आये हैं Trade Dispute Act ताकि इन कामचोर भारतीयों से हम अच्छे से काम निकाल सकें। इसके लिए.......

[अचानक से एक तेज़ धमाका होता है, सब डर जाते हैं पर किसी को चोट नहीं आती]

[बी.के. भट्ट और भगत सिंह इंकलाब जिंदाबाद और जय हिंद के नारे लगाते हैं, पुलिस आकर उन्हें गिरफ्तार कर लेती है]

अंग्रेजी पुलिसकर्मी: तुम आतंकवादियों ने ये धमाका क्यों किया

भगत सिंह: हम आतंकवादी नहीं, देशभक्त हैं। हमने ये धमाका तुम लोगों के बेहरपन की वजह से किया, क्योंकि तुम हमारे देशवासियो की बात नहीं सुनते हो

अंग्रेजी पुलिसकर्मी: Shut up!! अब हम सिर्फ तुम्हारी फांसी पर लटकने की आवाज ही सुनेंगे

भगत सिंह: (मुस्कराते हुए) मौत से डर नहीं लगता मुझे, अंग्रेज़ों के शासन में रहने से लगता है

(पुलिस वाला उन्हें धक्का दे के ले जाता है, इंकलाब जिंदाबाद और जय हिंद के नारे लगते हैं)

*****दृश्य V* की समाप्ति ****

दृश्य VI

Announcer (with placard): लाहौर जेल, 23 मार्च 1931

Narrator: आ गया वो पल, जिसका हमें था डर,

पर मौत के सामने भी भगत सिंह रहे निडर

जेलकर्मी: भगत सिंह, तुम्हारी मौत का समय आ गया है ,अरे, तुम मुस्कुरा क्यों रहे हो?

भगत सिंह: (एक बहुत बड़ी मुस्कुराहट के साथ) आख़िरकार मुझे अंग्रेजी शासन से मुक्ति मिल रही है! ये तो बहुत ख़ुशी की बात है!

जेलकर्मी: तुम्हारा मानसिक संतुलन सही नहीं है, चलो अब बहुत देर हो रही है

(जेलकर्मी भगत सिंह और बी.के. भट्ट को बहार लेकर जाते हैं, इतने में वो दोनों गाना गाते लगते हैं;

♫ ♫ देश का प्यार हमें इस मोड़ पर ले आया, दिल ये चाहें, अंग्रेज़ जाएँ, आज़ादी आएँ, hmm hmm hmm ♫ ♫)

जेलकर्मी: (बहुत कटुता के साथ) Silence!!!! बहुत हो गया तुम्हारा...... अब तुम्हारे मरने की बारी है

{भगत सिंह भट्ट को गले लगता है, और फिर सुली पर चढ़ता है}

भगत सिंह: *ओह अंग्रेज, तुम मुझे आज यहां मार सकते हो, पर मेरी चिता के धुएं से भी आजादी और देशभक्ति की खुशबू निकलेगी जो सौ और क्रांतिकारियों को जन्म देगी, कभी ना कभी तुम लोगों को हार मिलेगी और एक दिन मेरा भारत आजाद होगा*

इंकलाब जिंदाबाद!!!! इंकलाब जिंदाबाद!!!!!! इंकलाब............

[अचानक से रस्सी के खिचने की आवाज आती है और भगत सिंह हमेशा के लिए शांत हो जाते हैं, पर उनके चेहरे पर एक मुस्कान रहती है]

[एक पल के लिए एकदम शांति हो जाती है और फिर जय हिंद और इंकलाब जिंदाबाद के नारे शुरू हो जाते हैं।]

******* पर्दा गिर जाता है*******

-नव्य शर्मा